

5. सच्चवाणस्स सावित्री



‘सावित्री’ म्हटले की, आपल्या डोळ्यांसमोर सावित्रीबाई फुले आणि सत्यवानाची सावित्री यांचे कणखार, धैर्यशील, बुद्धिमान व संकटकाळातही संयम न सोडणारे व्यक्तिमत्व उभे राहते.

दुष्टांना आणि रुढी परंपरांना न जुमानता सावित्रीबाई फुलेनी महिलांसाठी शाळा चालवून अज्ञानाच्या जोखडीतून स्त्रियांची मुक्तता केली तर सत्यवानाच्या सावित्रीने यमाच्या मृत्युफाशातून स्वतःच्या पतीची मुक्तता केली. अशा या धैर्यशील, बुद्धिमान, चतुर व्यक्तिमत्व असलेल्या सत्यवानाच्या सावित्रीचा परिचय नवीन पिढीला होणे गरजेचे आहे.

सत्यवानाची सावित्री ही अश्वपतीची एक मुलगी. ती तारुण्यात आल्यावर आपल्या जीवनसाथीदाराची निवड ती स्वतःच करते. परंतु दुर्दैवाने तिचा पती अल्पायुषी ठरतो. यमराज आपल्या पतीचा प्राण घेऊन जात असताना सामान्य स्त्रीप्रमाणे ती आक्रोश करत न बसता यमाच्या पाठीमागून जाऊ लागते. तेव्हा यम आणि सावित्री याच्यांत जो संवाद झाला तो सावित्रीची बुद्धिमत्ता, धैर्य, संयम इ. विविध गुण स्पष्ट करणारा असून प्राचीनकालीन भारतीय स्त्रियांचे श्रेष्ठत्व स्पष्ट करणाराही आहे. तो संवाद संक्षिप्तपणे या पाठात अनुवादित केलेला आहे. तेव्हा तो आदर्श डोळ्यासमोर ठेऊन आजच्या तरुण भारतीय स्त्रियाही प्रतिकूल स्थितीवर मात करून आपणही सत्यवानाच्या व फुलेंच्या सावित्रीप्रमाणे धैर्यशील, बुद्धिमान, सबला स्त्रिया असल्याचे दाखवून देतील असा या पाठाचा उद्देश आहे.

जमराय - सावित्ती तुमं मम मगे किं एसि? तव पइस्स मच्चू होइ। तओ पइस्स देहस्स अंतसक्कारं करेह।

सावित्ती - पइस्स मगे निरंतरं गच्छह ति भारहीय नारीए धम्मं अत्थि। तेण अहं मम पइस्स मगे एमि।

जमराय - तुज्ज्ञ पइणिट्टा दद्वूण ममं अच्चंतं आणंदं होइ। तओ पइस्स पाणं मुंचिऊण अण्णं कोवि वरं मगासु।

सावित्ती - मम ससुरं दिट्टी नत्थि तस्स दिट्टि देह।

जमराय - 'आमं ति' एण्हिं तुमं गच्छ। चलणस्स निरत्थकं कटुं न घेसि।

सावित्ती - मम पई जत्थ गच्छिस्सइ तत्थ अहं वि गच्छिस्सामि। पइस्मं गच्छंताण मम किंचि वि कटुं न होइ। बीओ तुमं सहावं वि सुपुरिसाण इव अत्थि तेण अहं तुमं समं बोल्लामि।

जमराय - भो सावित्ती ! तुज्ज्ञ वयणेण मम हियं पसन्नं होइ। पइस्स पाणं मुंचिऊण अण्णं को वि वरं मगासु।

सावित्ती - मम ससुरस्स गय-विहवं पुणो पाविस्सइ।

जमराय - तहेव च्चिय होउ। एण्हिं ता तुमं गच्छ।

सावित्ती - जमराय तुमं सब्वं धम्म-नियमं जाणसि तेण तुमं यमं त्ति नामेण संबोहइ। बीओ तुमं सनुस्स वि हियं चिंतसि। दीणजणाण उवरिं वि अणुकंपा करेसि।

जमराय - सावित्ती! तुज्ज्ञ वयणं तण्हाजीवस्स जलं इव अत्थि। तं सुणिऊण मम हियं संतुडुं होइ। तओ सच्चवाणस्स पाणाए विणा अण्णं वरं मगासु।

सावित्ती - मम पिउणो वंसवड्हीए एगं वि पुतं नत्थि। ताव तस्स पुतं भविस्सइ।

जमराय - तहेव च्चिय होउ। एण्हिं ता वि तुमं गच्छसु।

सावित्ती - मम पइ तुमं समीवं अत्थि। पइं मुंचिऊण अहं कहिं गच्छामि? बीयं तुमं मम सब्वं इच्छा पुण्णं करेसि। अण्णं, तुमं मम सब्ववयणं सुणिऊण तेण पमाणं करित्था। तओ एवं पयारस्स दयावंतस्स मुंचिऊण अहं अण्णतं कहिं ण गच्छामि।

जमराय - सावित्ती, एवं पयारस्स तुज्ज्ञ वयणं सुणिऊण मम वि हियए दयाभावं निम्माणं होइ। तओ वरं मगासु।

सावित्ती - मए पुतं होस्सइ।

जमराय - तव इच्छा सिग्धं पुण्णं होउ। एण्हिं ता गच्छ।

सावित्ती - एयं विस्सं संत-सुपुरिसस्स आयार-वियारेण धम्मनीईएण च्चिय तरइ। भारहीय सक्रीये पइस्ससमं च्चिय पुतं मण्णइ। एयं तुमं पि जाणसि।

जमराय - भो चरित्तसंपण्ण-इत्थीए! तुमं एयं वयणेण अहं अहियं आणंदं होमि। ता वरं मगासु!

सावित्ती - तुम्हे मए पुत्तस्स वरं देसि। तेण अहं तुमं आभारं मण्णामि। किंतु मम पई मए समं नत्थि। ता मए पुतं कहं होइ? जइ इयराओ पुरिसाओ पुतं पावइ ता लोगा मए असइं संबोहिस्सन्ति। बीयं पइस्स विणा अहं मयवयं अत्थि। तओ पइविणा मए किंपि इच्छा नत्थि।

जमराय - सावित्ती! तुमं अच्चंतं चउरा इत्थि अत्थि। तुमए मए संभासणम्मि जियसि। तुमं सच्चं सब्वसेटुं इत्थी अत्थि। तव एयं पि इच्छा पुण्णं होउ त्ति भणिऊण संतुडु-हियएण जमराएण सावित्तीए पइस्स पाणं वि देइ।

मच्चू - मृत्यु
 पई - पती
 मुंचिऊण - सोडून
 वरं - इच्छा, अपेक्षा, आकांक्षा
 ससुर - सासरे
 आमं - कबूल करणे, मान्य करणे
 कटुं - कष्ट
 निरथकं - निरथक, व्यर्थ
 हियं - हित लाभ
 तण्हा - तहानलेल्या
 पितणो - पिताच्या
 वळीए - वृद्धी, वाढीसाठी
 समीवं - समवेत, जवळ
 कहिं - कोठे
 अण्णतं - अन्यत्र
 इत्थीए - स्त्रीने
 अहियं - अधिक
 वर्तमाण - वर्तमानकाळातील
 कहं - कशी
 इयराओ - इतरांपासून
 बोहि - बुद्धी
 इमा - अशी, ही

बीओ - दुसरे
 इव - प्रमाणे, समान, सारखे
 हियय - हृदय, मन
 विहवं - वैभव
 पाविस्सइ - प्राप्त होऊ दे
 एण्हं - आता
 संबोहङ्ग - संबोधने, उच्चारणे
 सत्तुस्स - शत्रूचे
 तव - तुझी
 सिग्धं - ताबडतोब
 विस्स - विश्व, जग
 आयार - आचार
 तरङ्ग - तरणे, चालणे, अस्तित्वात असणे
 सक्कर्डङ्ग - संस्कृतीत
 मण्णङ्ग - मान्यता असणे
 असङ्ग - असती, चारित्र्यहीन
 मयवं - मृतवत
 मए - मला, माझी
 संभासणम्मि - बोलण्यात
 जियसि - जिंकलेस
 वसणं - संकट

स्वाध्याय

कृती करा

1 एका वाक्यात उत्तरे लिहा.

- 1) सावित्री कोणाची मुलगी होती ?
- 2) यमाने सावित्रीस मृत शरीराचे काय करावयास सांगितले. ?
- 3) सावित्रीने प्रथम वरदानासाठी कोणती इच्छा व्यक्त केली ?

- 4) यमाने इच्छित वरप्राप्तीसाठी सावित्रीस कोणती अट घातली होती?
 - 5) सावित्रीने स्वतःसाठी कोणता वर मागितला?
 - 6) भारतीय स्त्रीचे प्रमुख वैशिष्ट्य कोणते?

२ प्राकृतातील शब्द लिहा.

- | | | | | | |
|----|--------|----------------------|----|---------|----------------------|
| 1) | मार्ग | <input type="text"/> | 5) | दुसरे | <input type="text"/> |
| 2) | मृत्यु | <input type="text"/> | 6) | अन्यत्र | <input type="text"/> |
| 3) | सोडून | <input type="text"/> | 7) | शिवाय | <input type="text"/> |
| 4) | सासरे | <input type="text"/> | 8) | आता | <input type="text"/> |

3 वर्ण बदल स्पष्ट करा

- | | | | |
|----|----------|----|-------|
| 1) | पइ | 5) | सत्तू |
| 2) | सावित्ती | 6) | सब्ब |
| 3) | जमराय | 7) | सहाव |
| 4) | विहव | 8) | पाण |

4 रूपे ओळखा.

- | | | | |
|----|----------|----|--------|
| 1) | पाविस्सइ | 5) | होउ |
| 2) | ससुरस्स | 6) | अत्थि |
| 3) | हियं | 7) | होइ |
| 4) | सणिऊण | 8) | गच्छसि |

५ व्यक्तिचित्रण रेखाटा.

- 1) सावित्री 2) यमराज

6 खालील शब्दांसाठी पाठातील शब्द शोधा.

- | | | | | | |
|----|--------|--|----|--------|--|
| 1) | स्त्री | | 3) | दुसरा | |
| 2) | वैभव | | 4) | मृत्यु | |

7 उपक्रम :- प्रस्तुत पाठाप्रमाणे एखादी कथा नाट्यात रूपांतरित करा.

